युवक की गोली मारकर हत्या का आरोप, परिजनों ने प्रदर्शन किया

चिकित्सकों ने एक्सीडेंट का मामला बताकर जयपुर के लिए रैफर कर दिया था

करौली, (निसं)। जिला मुख्यालय के समीप अकोलपुरा गांव निवासी एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। मामले में परिजनों ने एसपी कार्यालय पर शव के साथ प्रदर्शन कर विरोध जताया है। वहीं कलेक्ट्रेट सर्किल को भी पूरी तरह से जाम कर दिया।

सूचना पर एएसपी सुरेश जैफ, डीएसपी अनुज शुभम, कोतवाली सीआई हेमेंद्र चौधरी, सदर थाना

- **जयपुर में उपचार के दौरान युवक की मौत हो गई थी, शव से गोली निकाली गई थी**

करौली कलेक्ट्रट सर्किल पर पीड़ित परिवारजनों के साथ लोगों ने धरना देकर जाम लगाया।

अधिकारी हेमराज शर्मा मौके पर पहुंचे और समझाइश की। बाद में एडीएम से मुलाकात कर मांगें रखी। इस दौरान कलेक्टर ने एक घंटे में पहुंचने का आश्वासन दिया। लेकिन एक घंटे बाद भी कलेक्टर के नहीं पहुंचने पर पुरानी कलेक्ट्रेट चौराहे पर शव रख जाम लगा दिया और धरना शुरू कर दिया।

जिससे दोनों ओर वाहनों की कतारें लग गई। करीब डेढ़ घंटे से अधिक समय तक चले जाम के कारण वाहन चालक और राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ा। करीब दो घंटे बाद डीडी आईसीडीएस अशोक सांखला, एएसपी सुरेश जैफ ने परिजनों से समझाइश कर आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी, नियमानुसार सरकारी मुआवजा देने, नौकरी के लिए अनुशंसा और जांच कमेटी से रिपोर्ट मिलने के बाद दोषी चिकित्सक के खिलाफ कार्रवाई का आश्वासन दिया। आश्वासन पर परिजन सहमत हो गए और शव को लेकर रवाना हो गए। इसके बाद पुलिस ने जाम हटाकर यातायात सुचारु कराया।

परिजनों का आरोप है कि घायल युवक को 2 दिसंबर को करौली अस्पताल ले गए थे। जहां चिकित्सकों ने एक्सीडेंट का केस बताकर जयपुर रैफर कर दिया। युवक की जयपुर में मौत हो गई। जहां उसके शव से गोली निकाली गई। परिजनों का आरोप है कि कुछ युवक दो दिसंबर को मृतक हेमेंद्र पुत्र अरविंद निवासी अकोलपुरा 20 को घर से बुलाकर ले गए थे। उसके बाद में युवक घायल अवस्था में डूंडापुरा गांव में पडा मिला था।

घायल को करौली अस्पताल ले कर गए। जहां चिकित्सकों ने एक्सीडेंट का मामला बताकर जयपुर के लिए रैफर कर दिया। जयपुर में उपचार के दौरान युवक की मौत हो गई। पोस्टमार्टम में युवक के सिर में गोली मिली है। परिजनों ने आरोपियों की गिरफ्तारी, दोषी चिकित्सकों पर कार्रवाई की मांग को लेकर के धरना प्रदर्शन कर विरोध जताया। मामले को लेकर प्रदर्शनकारियों ने कलेक्ट्रेट के सामने हाईवे पर भी जाम लगाने का प्रयास किया। हालांकि पुलिस ने समझाइश कर यातायात सुचारु कराया। पीड़ित परिवार ने कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा है मृतक दो भाई और एक बहन थे। मृतक हेल्पर का काम करता था जबकि मृतक का पिता मजदूरी का काम करता है।

बेकाबू होकर पलटा ट्रक, चालक की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। शाहपुरा जिले के हनुमाननगर थाना क्षेत्र में अंबाला जा रहा ट्रक अचानक सामने आई गाय को बचाने के प्रयास में बेकाबू होकर पलट गया। ट्रक के नीचे दबकर चालक की मौत हो गई, जबकि खलासी घायल हो गया। हनुमान नगर पुलिस ने बताया कि बूंदी जिले के टरकिया निवासी हंसराज (28) पुत्र गंगाराम गुर्जर ने पुलिस को रिपोर्ट दी कि वह अपने गांव के ही चालक लेखराज पुत्र सुखलाल गुर्जर के साथ ट्रक पर खलासी का कार्य करता है। दोनों ट्रक लेकर अंबाला जा रहे थे। टीकड़ के पास अचानक गाय सामने आ गई। उसे बचाने के प्रयास में ट्रक बेकाबू होकर पलट गया। हादसे में चालक लेखराज ट्रक के नीचे दब गया। आस-पास मौजूद लोगों ने चालक-खलासी को देवली अस्पताल पहुंचाया, जहां लेखराज को मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने हंसराज की रिपोर्ट पर दुर्घटना का मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी।

दो दशक बाद वल्लभनगर सीट पर भाजपा की वापसी हुई

जिले की सबसे हॉट सीट मानी जाती है जहां के परिणाम चौंकाते हैं

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर की वल्लभनगर विधानसभा सीट पर दो दशक के बाद भाजपा की वापसी हुई है। पूर्व गृहमंत्री स्व. गुलाब सिंह सिंह शक्तावत की पुत्रवधू प्रीति गजेंद्र सिंह शक्तावत एवं भींडर राजघराने की रणधीर सिंह भींडर की पत्नी दीपेंद्र कुवर को भाजपा के उदयलाल डांगी ने इस विधानसभा चुनाव में पीछे धकेलते हुए भाजपा का परचम फहराने में सफलता प्राप्त की है। वही 20 वर्षों से सत्ता के लिए संघर्ष कर रही भाजपा की भी वापसी कर सभी को चौंका दिया है।

वर्ष 2003 में भाजपा के प्रत्याशी रणधीर सिंह भींडर ने कांग्रेस के पूर्व गृहमंत्री गुलाब सिंह शक्तावत को 321 मतों से हराकर भाजपा को जीत दिलाई थी। उसके बाद भाजपा इस सीट पर 20 वर्षों तक काबिज नहीं हो सकी। वर्ष 2013 में रणधीर सिंह भींडर निर्दलीय प्रत्याशी होने के बावजूद 13167 वोटों से जीत गए। वर्ष 2018 में दूसरे नंबर रहे, तो वर्ष 2018 में कांग्रेस के गजेंद्र सिंह शक्तावत 3719 वोट से जीते।

वहीं वर्ष 2021 उपचुनाव में कांग्रेस की प्रीति शक्तावत 20606 वोट से जीती, तो भाजपा के हिम्मत झाला की जमानत जप्त हुई और भाजपा को छोड़कर आरएलपी को थामने वाले उदयलाल डांगी दूसरे स्थान पर रहे थे और जनता सेना के रणधीर सिंह तीसरे नंबर पर संतुष्ट करना पड़ा था। इस बार

- **इस सीट पर रणधीर सिंह भीण्डर की जनता सेना हर चुनाव में अपना वर्चस्व दिखाती है**
- **जनता सेना सुप्रीमो ने चुनाव के बाद कहा कि अब वे चुनाव नहीं लड़ेंगे**
- **जनता के आशीर्वाद से भाजपा की जीत हुई है : उदयलाल डांगी**

विधानसभा चुनाव में राजनीतिक समीकरण बदलने के साथ ही उदयलाल डांगी ने भाजपा में वापसी की। हालांकि उनके आने से यहां भाजपा के लिए मेहनत कर रहे हिम्मत सिंह झाला को अपनी राजनितिक म्हात्वाकांक्षा त्यागनी पड़ी। उदयलाल डांगी ने 20060 वोटों से जीत दर्ज की, कांग्रेस की प्रीति शक्तावत दूसरे नंबर पर रही और जनता सेना की दीपेंद्र कुंवर को तीसरे नंबर पर रही। दोनों महिला उम्मीदवारों की पराजय को राजपूत मतों के विभाजन का शिकार बताया जा रहा है।

इस विधानसभा चुनाव में जनता सेना के सुप्रीमो रणधीर सिंह भींडर ने अपनी पत्नी दीपेन्द्र कुंवर को मैदान में उतारा था क्योंकि कांग्रेस ने प्रीति गजेंद्र सिंह शक्तावत को उतरा था, सोच थी कि महिला होने का लाभ मिलेगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

वहीं भाजपा ने वर्ष 2018 में हार का सामना करने वाले उदयलाल डांगी को वापस मौका दिया। चुनावी मुकाबले में भाजपा ने आखिर 20 साल के राजनितिक सूखे को खत्म कर दिया है। इस विधानसभा पर इस बार पांच प्रत्याशियों की जमानत जब्त हुई। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा और कांग्रेस को भी जीतने के लिए दमखम लगाना पड़ रहा है।

वल्लभनगर विधानसभा से जीते भाजपा प्रत्याशी उदयलाल डांगी ने कहा कि जनता के आशीर्वाद से भाजपा की जीत हुई है। जीत का पूरा श्रेय वल्लभनगर विधानसभा क्षेत्र की जनता को है। मुझे जनता ने सेवा करने का मौका दिया, जिसके लिए मैं जीवनभर इस क्षेत्र की जनता का आभारी रहूंगा। केंद्र सरकार की योजन को गांव-ढाणी तक पहुंचा कर आमजन को राहत पहुंचाई जायेगी। डबल इंजन की सरकार से ऐसा विकास होगा जो 70 सालों में नहीं हुआ। इधर जनता सेना के सुप्रीमो ने सोश्यल मीडिया पर वीडियो वायरल कर कहा कि ये उनका आखिरी चुनाव था अब वे चुनाव नहीं लड़ेंगे और मतदाताओं को आभार जताया था।

बाड़मेर में दो पूर्व विधायक के पुत्रों ने बाजी मारी

जालोर, (कासं)। बाड़मेर जिले की सात सीटों पर इस बार विधानसभा चुनाव काफी चर्चाओं में रही जिसमें सबसे चर्चित सीट शिव विधानसभा क्षेत्र की रही। वही गुड़ामालानी व पचपदरा सीट दो पूर्व विधायक के पुत्र ने बाजी मारकर सबको चौका दिया।

वहीं बाड़मेर सीट पर भाजपा की बागी प्रियंका चौधरी ने बगावत करते हुए भाजपा प्रत्याशी की जमानत जब्त करवा दी। भाजपा प्रत्याशी ने प्रदेश में सबसे कम मत भाजपा उम्मीदवार के रूप में प्राप्त किये। शिव में निर्दलीय उम्मीदवार रविन्द्रसिंह भाटी ने अपने दम पर ताल ठोककर चुनाव जीतकर प्रदेश में सबसे चर्चित सीट के रूप में नजर आई। बाड़मेर जिले की सात सीटों में चार पर भाजपा, एक पर कांग्रेस व दो पर निर्दलीय प्रत्याशी ने जीत दर्ज की। बाड़मेर विधानसभा क्षेत्र की सीट पर टिकट मिलने से पूर्व ही भाजपा की प्रियंका चौधरी ने भाजपा समर्थकों के साथ नामांकन दाखिल कर दिया। लेकिन प्रियंका का सतपाल मलिक का साथ देने से भाजपा ने एनवक्त पर टिकट काटकर नये चेहरे के रूप में दीपक कडवसरा को खड़ा दिया। दीपक को टिकट मिलने के बाद प्रियंका ने भाजपा से बगावत करते हुए निर्दलीय चुनाव लड़कर कांग्रेस से लगातार जीत दर्ज करने वाले मेवाराम जैन को 13337 मतों से पराजित किया।

निर्दलीय प्रियंका की जीत काफी चर्चाओं में रही। वहीं शिव विधानसभा सीट पर इस बार भाजपा के जिलाध्यक्ष स्वरूपसिंह खारा व कांग्रेस के जिलाध्यक्ष फतेह खान की साख दांव पर लगी थी। वहीं इस क्षेत्र में दसवीं बार

- **भाजपा के दो बागियों ने चुनाव जीत कर ताकत दिखाई, शिव सीट सबसे चर्चित रही**

चुनाव लड़ रहे वयोवृद्व अमीन खान के लिए भी यह उनका अंतिम चुनाव होने से जीत उनके लिए अहम थी। ऐसे में जेएनयूवी के पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष रविन्द्रसिंह भाटी ने भाजपा से टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय ताल ठोकर प्रदेश की नजरों में सबसे चर्चित सीट बना दिया। कांग्रेस के बागी फतेह खान व भाजपा से टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय रविन्द्रसिंह भाटी के शिव में ताल ठोकने से कांग्रेस के अमीन खा व भाजपा के खारा के जीत के आसार कम हो गये। ऐसे में भाटी युवाओं के आइकॉन बनने के साथ भाटी को प्रदेशभर के युवाओं का पूर्ण समर्थन मिला। वहीं भाटी भी युवा जोश के साथ यूनिवर्सिटी स्टाईल में निर्दलीय चुनाव लड़ने की ठानने से शिव के चुनाव काफी चर्चाओं में रहे। भाटी ने निर्दलीय चुनाव जीत कर यह बता दिया कि जनता की मांग पर चुनाव लड़ने के लिए किसी भी पार्टी के सिम्बल की आवश्यकता नही हैं। भाटी ने निर्दलीय फतेह खान को 3950 मतों से पराजित किया।

निर्दलीय रविन्द्रसिंह भाटी के विजयी होने पर प्रदेश भर के युवाओं में जोश नजर आया। वहीं इस बार गुड़ामालानी व पचपदरा की सीट पर दो पूर्व विधायक के पुत्र चुनावी रण में खड़ा होने से पूर्व विधायक की साख भी दांव पर थी। ऐसे में गुड़ामालानी सीट पर भाजपा के पूर्व विधायक लादूराम के पुत्र कृष्ण कुमार विश्नोई व पचपदरा में पूर्व मंत्री अमराराम चौधरी के पुत्र अरूण कुमार चौधरी को टिकट देने से इस सीट पर भी सभी की नजरें टिकी हुई थी। गुड़ामालानी सीट पर भाजपा के कृष्ण कुमार विश्नोई ने कांग्रेस के कर्नल सोनाराम को 15217 मतों पराजित किया। कर्नल सोनाराम कुछ समय पहले ही भाजपा छोड़कर कांग्रेस में आये तथा सबसे सुरक्षित सीट गुड़ामालानी से चुनाव लड़ा। लेकिन पूर्व मंत्री हेमाराम चौधरी साथ होने के बाद भी सोनाराम नही जीत पाये। यदि इस सीट पर हेमाराम चुनाव लड़ते तो यह सीट कांग्रेस जीत सकती थी। लेकिन सोनाराम को जनता ने अस्वीकार किया।

पचपदरा सीट पर पूर्व मंत्री अमराराम चौधरी के पुत्र अरूण चौधरी के चुनाव मैदा में खड़े होने से इस सीट पर बालोतरा को जिला बनाने वाले मदन प्रजापत अपनी जीत को लेकर काफी आश्वास्त थे। लेकिन आरएलपी के थानसिंह डोली के चुनावी मैदान में उतरने से भाजपा के चौधरी की राह आसान हो गई तथा अरूण चौधरी ने कांग्रेस के प्रजापत को 2529 मतो से पराजित किया। बाड़मेर में दो पूर्व विधायक के पुत्रों की जीत भी काफी चर्चा में रही। खासकर बाडमेर व शिव से निर्दलीय प्रत्याशियो के जीता प्रदेश भर में चर्चा का विषया बना रहा। बाड़मेर में सिवाना से कांग्रेस के मानवेन्द्रसिंह, गुड़ामालानी से कर्नल सोनाराम चौधरी, बाड़मेर से मेवाराम जैन, शिव से अमीन खान को हार का सामना करना पड़ा। बाड़मेर की सात सीटों इस बार काफी चर्चित रहने से प्रदेश भर की नजर इस पर टिकी रही।

निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर चुनाव लड़ने पर जनता ने नकारा : डॉ. बाहेती

अजमेर, (कासं)। 25 नवंबर को हुए चुनाव तथा तीन दिसंबर को आए परिणामों में पुष्कर विधानसभा क्षेत्र से आए परिणामों ने एक बार पुनः सबको आश्चर्यचकित कर दिया है। जहां पुष्कर विधानसभा के परिणाम में भाजपा प्रत्याशी सुरेश सिंह रावत ने कांग्रेस के निकटतम प्रत्याशी नसीम अख्तर इंसाफ को 13000 से भी अधिक मतों से पराजित किया।

सुरेश सिंह रावत को 84619 मत प्राप्त हुए वहीं नसीम अख्तर इंसाफ ने 70750 मत प्राप्त किये तथा निर्दलीय भाजपा के बागी प्रत्याशी अशोक सिंह रावत ने 16052 मत प्राप्त किये तथा पुष्कर के पूर्व विधायक डॉ. श्री गोपाल बाहेती ने 8457 मत ही प्राप्त किये, जबकि राजनीतिक पंडित यह कयास लगा रहे थे कि डॉ. बाहेती इस मुकाबले को रोमांचक मोड़ में पहुंचा देंगे। काफी अच्छी मात्रा में बाहेती वोट प्राप्त करेंगे परंतु परिणाम इसके उलट ही आए। जहां

- **पुष्कर विस. क्षेत्र से आए परिणामों ने एक बार पुनः सबको आश्चर्यचकित किया**

डॉक्टर बाहेती को पुष्कर तथा पुष्कर के आसपास के क्षेत्र तथा रूपनगढ़ क्षेत्र से अच्छी मात्रा में वोट मिलने की उम्मीद थी वहां भी परिणाम वैसा नहीं रहा।

इस बारे में डॉक्टर बाहेती ने कहा कि निर्दलीय के रूप में चुनाव लड़ने पर विशेष कर महिलाओं ने मुझे नकार दिया है क्योंकि मेरी पहचान कांग्रेस से ही थी क्योंकि मैं पिछले काफी वर्ष से कांग्रेस से जुड़ा हुआ था। मैं अजमेर शहर कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर भी कार्य किया तथा कांग्रेस में रहते हुए अजमेर नगर सुधार न्यास के अध्यक्ष पद पर कार्य किया तथा शहर में विकास के कार्य करवाए। सन् 2003 में कांग्रेस प्रत्याशी के तौर पर पुष्कर विधानसभा से चुनाव लड़ा तथा पुष्कर से कांग्रेस प्रत्याशी के तौर पर विजय प्राप्त की इसलिए मेरी पहचान कांग्रेस से ही थी। जब उन्होंने कुछ महिलाओं से पूछा कि वोट किसे दिया है तो उन्होंने कहा कि वोट तो हमने हाथ को ही दिया है तो उन्होंने कहा कि मेरा चुनाव चिन्ह बाल्टी था तो महिलाओं ने कहा कि हम तो आपको हाथ से ही पहचानते हैं क्योंकि आपने तो हाथ के चुनाव चिन्ह पर ही पूर्व में पुष्कर से चुनाव लड़ा था तथा विजय प्राप्त की थी।

महिला की मौत

जोधपुर, (कासं)। निकटवर्ती ओसियां तहसील के जाटीपुरा गांव में खेत में कीटनाशक का छिड़काव करते एक महिला की तबीयत बिगड़ गई। इसको उपचार के लिए ओसियां अस्पताल में भर्ती करवाया गया, मगर मौत हो गई।

मृतका के पुत्र की तरफ से पुलिस ने मर्ग दर्ज कर शव परिजन को सौंपा। जाटीपुरा ओसिया निवासी विश्नाराराम पुत्र नगाराम जाट ने पुलिस को बताया कि शाम के समय उसकी माता पारू देवी खेत में कीटनाशक का छिड़काव कर रही थी। इसी दौरान कीटनाशक के प्रभाव से समय बेहोश हो गई थी। उनको को इलाज के लिये तत्काल अस्पताल लेकर गए। मगर बाद में उपचार के बीच उनकी मौत हो गई। ओसियां पुलिस ने घटना में मर्ग दर्ज किया है। शव को कार्रवाई के बाद परिजन के सुपुर्द कर दिया गया।

नोखा में हावी रहा सहानुभूति फैक्टर, कांग्रेस की सुशीला डूडी विजयी

भाजपा के चक्रव्यूह से नोखा सीट बचा ले गई डूडी फैमिली

नोखा, (निसं)। विधानसभा क्षेत्र ने कांग्रेस की सुशीला डूडी को अपना विधायक चुन लिया है। कुल पोल हुए 2 लाख 14 हजार 219 मतों में से डूडी ने 83 हजार 215 मत प्राप्त कर जीत हासिल की। मुकाबले में भाजपा के बिहारीलाल बिश्नोई रहे। पार्टी ने यहां टिकट रिपीट कर उन्हें प्रत्याशी बनाया था। यहां कांटे का मुकाबला था, जो मतगणना के दौरान भी साफ दिखा।

नोखा विधानसभा के मतों की गणना के दौरान आधे से ज्यादा राउंड तक भाजपा और कांग्रेस दोनों ही प्रत्याशियों के समर्थक जीत को लेकर आश्वस्त नहीं थे। भाजपा के बिहारीलाल ने शुरुआत में अच्छी बढ़त बनाई, फिर कुछ राउंड में कांग्रेस की सुशीला डूडी के पक्ष में ज्यादा मत निकले। इसके बाद डूडी और बिहारी में कई राउंड कांटे का मुकाबला चला। बाजी कांग्रेस की सुशीला डूडी ने ही मारी। जब 15 राउंड की मतगणना के बाद मतगणनाकर्मी भोजन करने लग गए। मतगणना रोक दी गई और सोशल मीडिया पर बिहारीलाल की जीत को लेकर पोस्टें वायरल होने लग गईं।

ऐसे में मतगणना स्थल पर लोगों से वास्तविकता का पता लगाने के लिए लोग सम्पर्क साधने लग गए। बाद में तीन राउंड तक डूडी ने लीड कायम रखी। इसके बाद भी भाजपा कार्यकर्ता निराश नहीं हुए। माना जा रहा था कि अंतिम के पांच राउंड में नोखा शहर की ईवीएम खुलेगी और भाजपा को बड़ी बढ़त मिलेगी। परन्तु ऐसा नहीं हुआ और अंततः सुशीला डूडी को विजेता घोषित किया गया। नोखा सीट पर भाजपा के बिहारीलाल और कांग्रेस के रामेश्वर डूडी के खेमे हैं। अभी रामेश्वर डूडी के अस्वस्थ होने के चलते उनकी पत्नी सुशीला डूडी को पार्टी ने चुनाव मैदान में उतारा। सहानुभूति फैक्टर प्रभावी दिखा। कन्हैयालाल झंवर ने शहरी वोटों में बड़ी सेंधमारी कर बिहारी को पछाड़ने का काम कर दिया। भाजपा की उम्मीद निर्दलीय प्रत्याशी मगनाराम केडली पर थी। जो कांग्रेस के वोटों में सेंधमारी कर रहे थे। उन्होंने सेंधमारी की भी, लेकिन इतनी नहीं कर पाए, जितनी झंवर ने भाजपा के वोटों में कर दी।

सैनिक स्कूलों की नौवीं कक्षा में पहली बार पढ़ेंगी बेटियां

बीकानेर, (निसं)। बदलते दौर के साथ-साथ बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ अभियान के तहत बालिका शिक्षा के नए आयाम स्थापित हो रहे हैं जो देश में बेटियों के लिए अच्छा कदम है। इस कड़ी में रक्षा मंत्रालय ने इस वर्ष चुनिंदा स्कूलों की कक्षा नौ में भी लड़कियों को प्रवेश देने का निर्णय किया है। जिससे अब बेटियां भी सेना के क्षेत्र में अपना परचम लहराएगी। सैनिक स्कूलों में इससे पहले कक्षा नौवीं के लिए केवल छात्र ही पात्र हुआ करते थे।

देश के 33 सैनिक स्कूलों और 19 नए सैनिक स्कूलों में सत्र 2024-25 में प्रवेश के लिए आवेदन मांगे गए हैं। इसके ऑनलाइन आवेदन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की वेबसाइट पर 16 दिसंबर तक स्वीकार किए जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि देशभर के 33 सैनिक स्कूलों में से 2 स्कूल राजस्थान के झुंझुनूं और चित्तौडगढ़ जिले में संचालित हैं। इनकी 67 प्रतिशत सीटों पर राजस्थान के विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जाएगा। वहीं, 33 फीसदी सीट दूसरे राज्यों के विद्यार्थियों के लिए आरक्षित रहेगी। इसके साथ ही एससी के लिए 15 फीसदी, एसटी के लिए साढ़े सात फीसदी, ओबीसी के लिए 27 फीसदी सीट आरक्षित है। इसके अलावा कुछ सीट रक्षाकर्मियों व भूतपूर्व सैनिकों के बच्चों के लिए आरक्षित

- **कक्षा छह और नौवीं में प्रवेश के लिए आवेदन 16 तक**

रहती हैं राज्य में छठी कक्षा के लिए 200 तथा 9 वीं के लिए 35 रिक्तियां हैं। जिन पर दाखिले के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षा 21 जनवरी को अजमेर, बीकानेर, चित्तौडगढ़, जयपुर, झुंझुनूं, जोधपुर कोटा और श्रीगंगानगर जिले के परीक्षा केंद्रों पर होगी। कक्षा छह में प्रवेश के लिए विद्यार्थी की उम्र 31 मार्च 2024 को 10 वर्ष से 12 वर्ष के बीच में होनी चाहिए। नौवीं कक्षा में प्रवेश के लिए विद्यार्थी की उम्र 31 मार्च 2024 को 13 वर्ष से 15 वर्ष के मध्य व मान्यता प्राप्त स्कूल से आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होना जरूरी है।

शिक्षक संघ रेसटा, प्रदेशाध्यक्ष मोहर सिंह सलावद ने कहा कि सैनिक स्कूलों में प्रवेश परीक्षा में बेटियों को शामिल करने का निर्णय का स्वागत है। एआईएसएसईई-2024 के तहत कक्षा छह के पेपर में प्रवेश हेतु 125 प्रश्न जबकि कक्षा नौ के लिए 150 प्रश्न पूछे जाएंगे। इन बहुविकल्पीय सवालों का जवाब पेपर पेंसिल मोड से ओएमआर शीट पर देना होगा। विद्यार्थियों को पेपर के प्रत्येक विषय में 25 तथा समेकित रूप से न्यूनतम 40 फीसदी अंक लाना जरूरी है।

पांच उम्मीदवार तो नोटा से ही हारे

छबड़ा (निसं)। विधानचुनाव के तहत यहां दस उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे थे। जिसमें भाजपा के प्रतापसिंह सिंघवी ने एक बार फिर विजयश्री हासिल की। किंतु आश्चर्य की बात यह रही कि पांच उम्मीदवार तो नोटा से ही हार गए।

रविवार को हुई मतगणना के बाद चुनावी आईना पूरी तरह साफ हो गया। यहां भाजपा के प्रतापसिंह सिंघवी ने अपने प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के करणसिंह राठौड़ को 5108 मतों से शिकस्त देकर विजयी हुए। लेकिन इस चुनाव में एमएलए बनने का स्वप्न संजोए हुए पांच प्रत्याशियों को तो नोटा ने ही हरा दिया। मतलब इनसे ज्यादा तो नोटा को ही मतदाताओं ने चुन लिया।

इसके चलते परिवर्तन पार्टी ऑफ इंडिया के चिंटूलाल अहीर को 1082, बहुजन समाज पार्टी के छीतरलाल को 1327, अभिनव लोकतंत्र पार्टी की रूपकंवर को 1674, निर्दलीय जयनारायण को 2115, आम आदमी पार्टी के गिर्राज प्रसाद मीणा को 2918 मत मिले। जबकि इनसे ज्यादा 3101 मतदाताओ ने नोटा चुना। वही, चुनावी माहौल में दमखम दिखाने वाले निर्दलीय उपेंद्र शर्मा भी अपनी जमानत नही बचा पाए। शर्मा को केवल 13386 वोट मिले।

बिना मौसम की बारिश ने ईंट-भट्ठा मजदूरों की मुसीबतें बढ़ाई

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले में बीते 24 घंटे से हो रही बेमौसम बरसात ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। बरसात से ईंट-भट्ठा चलाने वाले मजदूरों को भी काफी नुकसान हुआ है। शहर के हलेड क्षेत्र में ऐसे

- **हलेड क्षेत्र में 50 से अधिक परिवार बेमौसम बरसात से बुरी तरह प्रभावित, लाखों रुपए का नुकसान हुआ**
- **अब नुक़सान के बाद उनके सामने घर परिवार चलाने की बड़ी चुनौतियां उत्पन्न हो गई है**

ही भट्ठा चलाने वाले 50 से अधिक परिवार बेमौसम बरसात से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। यहां कच्ची ईंटों पर अचानक बरसात पड़ने से इन परिवारों को काफी नुकसान हुआ है। ईंट बनाने के काम में लगे ये परिवार बेमौसम बरसात से प्रभावित हुए हैं और लाखों रुपए का नुकसान भी

हलेड क्षेत्र में ईंट-भट्ठा चलाने वाले 50 से अधिक परिवार बेमौसम बरसात से प्रभावित हुये हैं।

इनको हुआ है।

ईंट भट्ठा कारीगर कैलाश प्रजापत ने बताया कि हर साल की तरह इस साल भी कच्ची ईंटे तैयार की जा रही थी और इस क्षेत्र में लगभग सभी ईट भट्टों पर हजारों की संख्या में कच्ची ईंटें पकाने के लिए तैयार थी। अचानक से बे मौसम बरसात हुई जो कल पूरे दिनभर चलती रही। इस बरसात ने सारी कच्ची ईंटों को खत्म कर दिया। बेमौसम बरसात बड़ी आफ़त लेकर आई। इससे लाखों रुपए का नुकसान हुआ है। अब नुक़सान के बाद उनके सामने घर परिवार चलाने की बड़ी चुनौतियां उत्पन्न हो गई है। बेमौसम बरसात ने उम्मीद की ईंटों पर भी पानी फेर दिया है। कई ऐसे परिवार जिनकी रोजी-रोटी का साधन यह ईंटें थी जिनके बिखरने से इनके कई अरमान भी बिखरे हैं।